International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 7.938, July-December 2024, Submitted in July 2024, ISSN -2393-8048

डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

कृष्णा कुमारी, शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
डॉ. मंजू शर्मा (सहायक आचार्य) शोध निर्देशिका, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री अग्रसेन स्नातकोतर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई., केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर (राज.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के लिए प्रायोगिक विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्ष के लिए जयपुर जिले के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्दः— माध्यमिक स्तर एवं अध्ययन आदत।

प्रस्तावना

भारत में माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय सामान्य शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग है। इस विषय के अन्तर्गत शिक्षार्थियों हेतु देश—काल और संस्थानों के परे प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण के साथ अन्योन्य क्रिया की व्यापक समझ समाहित है। सामाजिक विज्ञान विषय व्यक्तिगत व सामाजिक कल्याण पर प्रभाव डालने वाले सामाजिक मुद्दों के बारे में गंभीरता से विचार करने, बच्चों की क्षमता में बढ़ोतरी करते हुए, सामाजिक विज्ञान शिक्षण मानवीय मूल्यों जैसे— स्वतंत्रता, विश्वास और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है।

सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र, राजनीति विज्ञान व अर्थशास्त्र जैसे विषयों का समावेश है, इसलिए सामाजिक विज्ञान में शैक्षणिक प्रक्रियाएं, बालकों में अपने विचारों अनुभवों को साझा करने, दूसरों केविचारों को धैर्यपूर्वक सुनने, तथ्यों व अनुभवों का गंभीर रूप से मूल्यांकन करने वाली होनी चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 के एक भाग में सामाजिक विज्ञान की शैक्षणिक प्रक्रिया में ज्ञानमीमांसीय बदलाव की बात को दर्शाया गया है।

सामाजिक विज्ञान विषय एक विस्तृत विषय है जिसमें भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, राजनीति विज्ञान तथा सामान्य ज्ञान जैसे अनेक विषय सम्मिलित है, इस विषय की अवधारणाओं को विद्यार्थियों की सामाजिक, दैनिक गतिविधियों से जोड़कर प्रस्तुत किया जा सकता है परन्तु आधुनिकता के इस युग में भी शिक्षकों द्वारा इस विषय को रटन्त सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सामाजिक विज्ञान विषय की पाठ्यवस्तु को विभिन्न तकनीकी एवं डिजिटल पाठ्यवस्तु के माध्यम से प्रस्तुत कर अधिगम को प्रभावी बनाया जा सकता है। सामाजिक विज्ञान में डिजिटल पाठ्यवस्तु को एकीकृत करने से कई लाभ मिलते हैं। यह विद्यार्थियों को सूचना, मीडिया और प्रौद्योगिकी जैसे 21वीं सदी के कौशल के साथ—साथ सीखने और नवाचार कौशल विकसित करने की अनुमति देता है। डिजिटल पाठ्यवस्तु का एकीकरण सार्थक, शक्तिशाली और चुनौतीपूर्ण शिक्षण अनुभव प्रदान करके सामाजिक विज्ञान शिक्षा के लक्ष्यों का समर्थन करता है। यह विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों, समाजों और ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में उनकी समझ का विस्तार करते हुए, विस्तृत जानकारी और संसाधनों तक पहुंचने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक विज्ञान में डिजिटल पाठ्यवस्तु को एकीकृत करने से सहयोगात्मक शिक्षण और आलोचनात्मक सोच में भी वृद्धि होती है। अन्ततः, सामाजिक विज्ञान में डिजिटल पाठ्यवस्तु विद्यार्थियों को डिजिटल युग के लिए तैयार करता है और उन्हें वैश्विक समाज में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल भी प्रदान करता है।

डिजिटल पाठ्यवस्तु के द्वारा सामाजिक विज्ञान शिक्षण को अधिक रूचिकर, सरल व संवादात्मक बनाया जा सकता है। डिजिटल पाठ्यवस्तु के द्वारा विषय को पढ़ाये जाने के कारण बालक की शैक्षणिक उपलब्धि को बढाया जा सकता है तथा विद्यार्थी सीखने के लिए अधिक अभिप्रेरित होगा। विद्यार्थियों को बस्ते के बोझ को कम करने के लिए विज्ञान, गणित व भाषा के विषयों को डिजिटल पाठ्यवस्तु के द्वारा समझाया जा सकता है। डिजिटल पाठ्यवस्तु को चित्रों व संवेगात्मक रूप में विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है जो कि विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम होती है तथा इनसे विद्यार्थियों की षैक्षणिक उपलब्धि को बढाया जा सकता है।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

- **पाण्डे, चन्द्रा (2023)** ने ''माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन'' किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों

के द्वारा आई.सी.टी. अर्थात सूचना और सम्प्रेषण तकनीकी का प्रयोग (शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचिकर एवं प्रभावशाली बनाने के लिये) का अध्ययन करना था। इस हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। आंकडों के संग्रहण के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं विद्यार्थियों के एकेडमिक प्राप्तांकों का प्रयोग किया गया है तथा परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। शोध निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि सूचना और सम्प्रेषण तकनीकी का प्रयोग करने से माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

- **सिंह, रामगोपाल और अग्रवाल (2021)** ने ''इम्पेक्ट ऑफ ऑनलाइन क्लासेज ऑन द सेटिस्फेक्शन एण्ड परफोर्मेन्स ऑफ स्टुडेन्ट्स ड्यूरिंग द पेनडेमिक पीरियड ऑफ कोविड 19'' पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य कोविड –19 की महामारी के दौरान ऑनलाइन कक्षाओं के बारे में विद्यार्थियों की संतुष्टि और प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना और इन चरों के बीच संबंध स्थापित करना था। यह अध्ययन मात्रात्मक प्रकृति का था। इस अध्ययन में ऑनलाइन सर्वेक्षण के माध्यम से 544 उत्तरदाताओं से आंकड़े एकत्र किए गए थे जो भारतीय विश्वविद्यालयों में व्यापार प्रबंधन या होटल प्रबंधन पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर रहे थे। अध्ययन के परिणामों में यह पाया गया कि अध्ययन में उपयोग किए जाने वाले चार स्वतंत्र कारक जैसे प्रशिक्षक की गुणवत्ता, पाठ्यक्रम डिजाइन, त्वरित प्रतिक्रिया, और विद्यार्थियों की उम्मीद विद्यार्थियों की संतुष्टि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है तथा विद्यार्थियों की संतुष्टि विद्यार्थियों के प्रदर्शन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। ये चार कारक ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए संतुष्टि और प्रदर्शन के एक उच्च स्तर के लिए आवश्यक है।
- **विश्वकर्मा, अनीता (2020)** ने ''माध्यमिक स्तर की स्मार्ट कक्षाओं एवं सामान्य शिक्षण कक्षाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' किया। इस शोध का उद्देश्य स्मार्ट कक्षा शिक्षण एवं सामान्य कक्षा शिक्षण के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु न्यादर्श का चयन सरल या यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया जिसमें भोपाल शहर के स्मार्ट कक्षा शिक्षण से प्राप्त विद्यालय व सामान्य कक्षा शिक्षण से प्राप्त विद्यालय की कक्षा 9वीं एवं 10वीं के विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें विद्यालय में उपस्थित होकर प्रदत्तों का संकलन किया गया। अध्ययन के परिणाम में पाया कि माध्यमिक स्तर के स्मार्ट कक्षा शिक्षण एवं सामान्य कक्षा शिक्षण के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। माध्यमिक स्तर के सामान्य कक्षा शिक्षण के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि सामान्य कक्षा शिक्षण के विद्यार्थियों से कम पाई गई।

शोध के उद्देश्य

1 डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1 डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

2 डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

3 डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्राओं की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि एवं प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रायोगिक विधि का प्रयोग किया गया है। राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को अध्ययन की जनसंख्या है। न्यादर्ष के लिए राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों का चयन उद्देष्यपूर्ण न्यादर्ष विधि द्वारा किया गया। प्रदत्तों का संकलन करने हेतु स्वनिर्मित षैक्षणिक उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है एवं प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु माध्य, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 – डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in July 2024, ISSN -2393-8048

तालिका : 1

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
प्रायोगिक समूह के विद्यार्थी	50	31.88	7.57	3.30	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
नियंत्रित समूह के विद्यार्थी	50	27.34	6.13		

व्याख्या और विश्लेषण

तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के मध्य षैक्षणिक उपलब्धि में अंतर की गणना करने पर टी का मान 3.30 प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों का माध्य 31.88 और नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों का माध्य 27.34 प्राप्त हुआ, जो यह दर्शाता है कि प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों से अधिक श्रेष्ठ है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में अंतर है।

आरेख : 1

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर

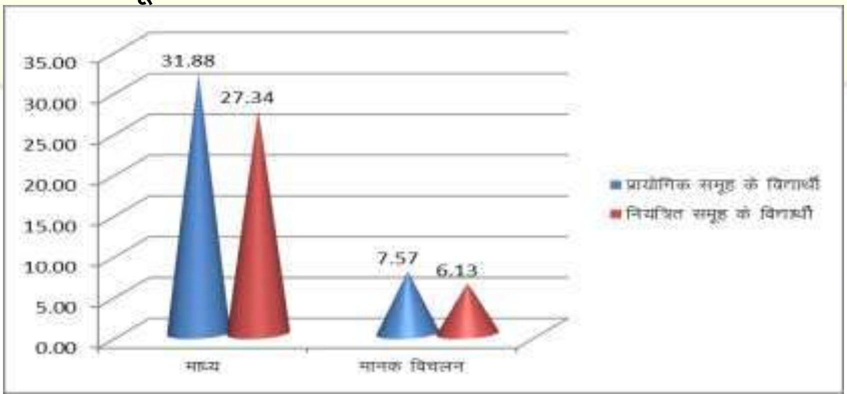

परिकल्पना 2 – डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका : 2

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
प्रायोगिक समूह के छात्र	25	33.25	8.44	3.89	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
नियंत्रित समूह के छात्र	25	25.41	5.52		

व्याख्या और विश्लेषण

तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर की गणना करने पर टी का मान 3.89 प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त प्रायोगिक समूह के छात्रों का माध्य 33.25 और नियंत्रित समूह के छात्रों का माध्य 25.41 प्राप्त हुआ, जो यह दर्शाता है कि प्रायोगिक समूह के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि नियंत्रित समूह के छात्रों से अधिक श्रेष्ठ है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में अंतर है।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in July 2024, ISSN -2393-8048

आरेख : 2

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर

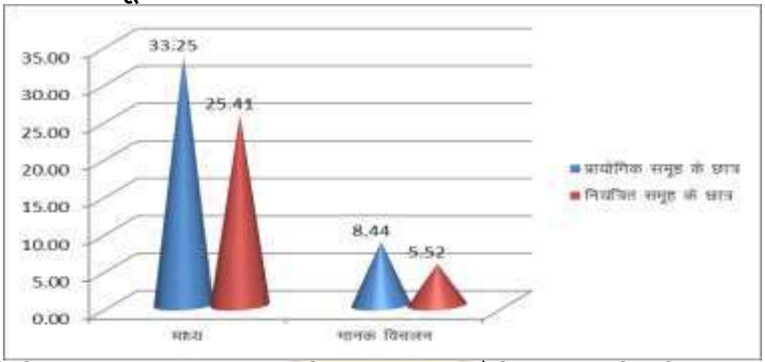

परिकल्पना 3 – डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की छात्राओं की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका : 3

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की छात्राओं की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
प्रायोगिक समूह की छात्रा	25	34.08	7.56	3.67	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
नियंत्रित समूह की छात्रा	25	27.38	5.11		

व्याख्या और विश्लेषण

तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर की गणना करने पर टी का मान 3.67 प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त प्रायोगिक समूह की छात्राओं का माध्य 34.08 और नियंत्रित समूह की छात्राओं का माध्य 27.38 प्राप्त हुआ, जो यह दर्शाता है कि प्रायोगिक समूह की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि नियंत्रित समूह की छात्राओं से अधिक श्रेष्ठ है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि डिजिटल पाठ्यवस्तु द्वारा शिक्षण का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की छात्राओं की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में अंतर है।

आरेख : 3

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की छात्राओं की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर

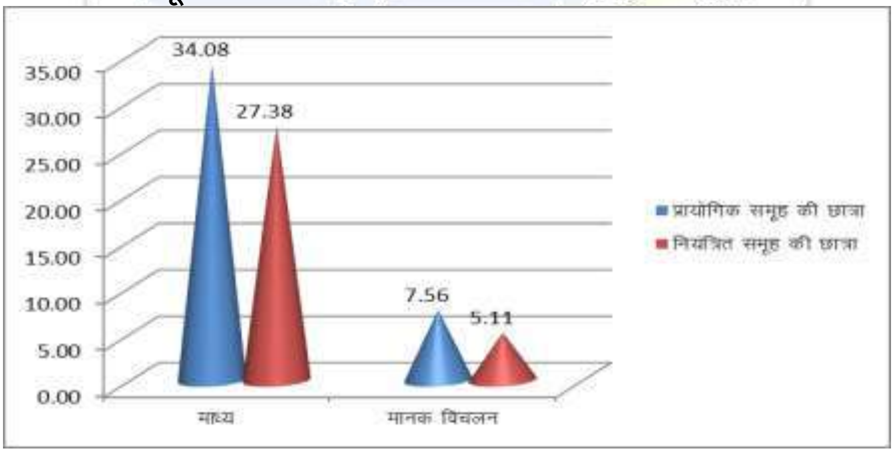

सुझाव

- प्रधानाचार्यों द्वारा शिक्षकों को डिजिटल पाठ्यवस्तु का उपयोग करने के लिए उचित प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता हैं।
- प्रधानाचार्यों द्वारा डिजिटल पाठ्यवस्तु का उपयोग सुचारु रूप से कराने के लिए उपयुक्त संसाधनों की उपलब्धता का ध्यान रखा जा सकता हैं।
- डिजिटल पाठ्यवस्तु को उपयोग में लाने के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जा सकता हैं।
- शिक्षकों को विद्यालय में डिजिटल पाठ्यवस्तु के उपयोग की परिस्थितियों को सुधारने के लिए प्रशासक के साथ मिलकर सार्थक प्रयास करने चाहिए।

सन्दर्भ गंथ सूची

- अग्रवाल, जे.सी.(2010). *शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं आर्थिक आधार* . आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (1963). *रिसर्च इन एजूकेशन.* नई दिल्ली : प्रेन्टाइस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड.
- भटनागर, आर.पी. (2007). *शिक्षा अनुसंधानः विधि एवं विश्लेषण.* मेरठः ईगल बुक्स इंटरनेशनल।
- गुप्ता, डॉ. एस.पी. (2005). *सांख्यिकीय विधियां (व्यवहापरक विज्ञानों में).* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
- करलिंगर, एफ.एन. (1967). *फाउण्डेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च.* न्यूयार्क : हालट रेनहार्ट एण्ड विन्सटर
- कपिल, एच. के.(1995). *अनुसंधान विधियाँ.* मेरठः भार्गव भवन
- कौल, लोकेश (2005). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., द्वितीय संस्करण।
- पाण्डे, चन्द्रा (2023). माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन. *International Journal of Creative Research Thoughts*, 11(1), 549-554.
- सिंह, रामगोपाल और अग्रवाल (2021). इम्पेक्ट ऑफ ऑनलाइन क्लासेज ऑन द सेटिस्फेक्शन एण्ड परफोर्मेन्स ऑफ स्टुडेन्ट्स ड्यूरिंग द पेनडेमिक पीरियड ऑफ कोविड 19- *Educ Inf Technol*, 26, 6923–6947
- शुभ्रज्योत्सना (2016). इम्पेक्ट ऑफ ऑनलाइन एजुकेशन ऑन हायर एजुकेशन. *International Journal of Engineering Research and Modern Education*, 1(1), 225-235.